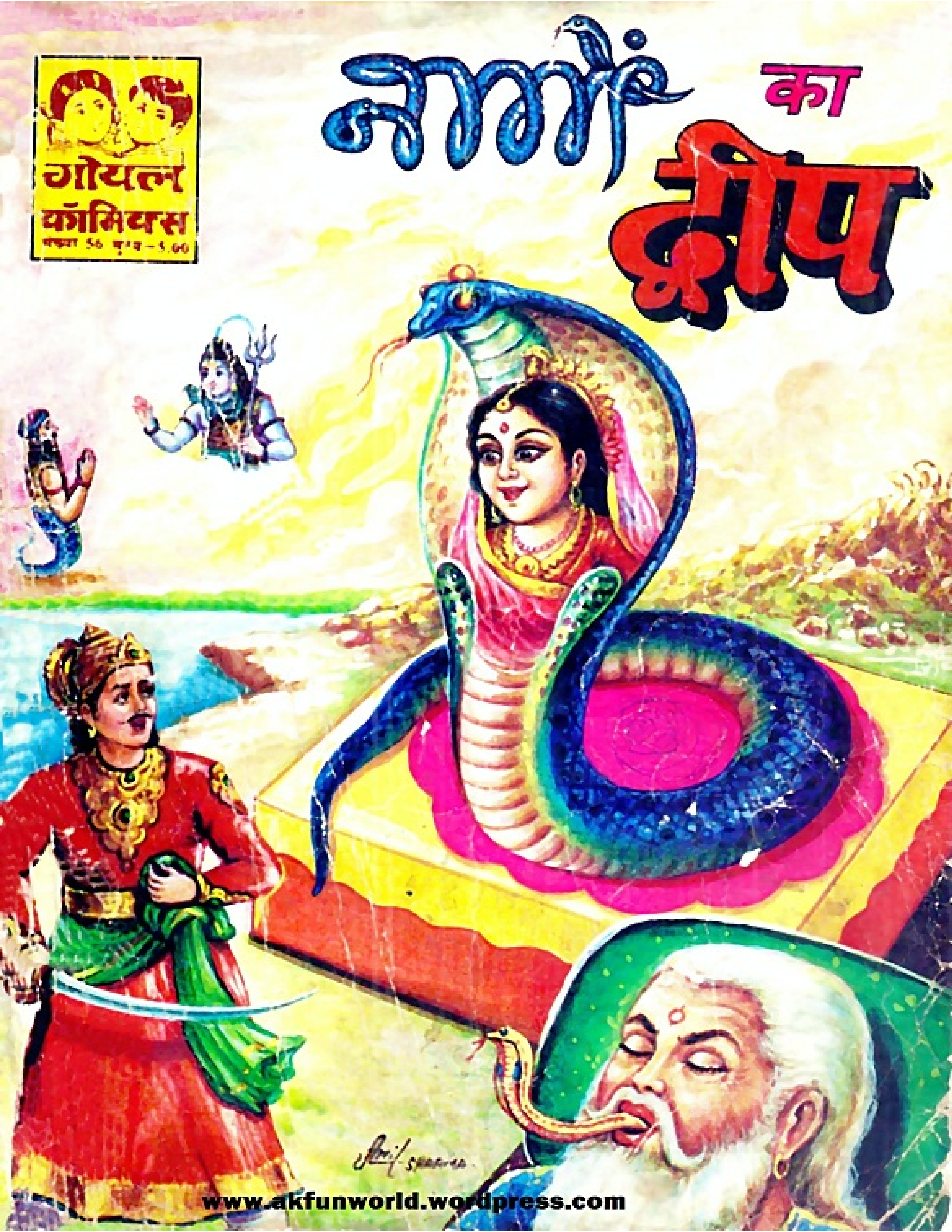

गोयल
कॉमिक्स
नागों का
द्वीप





पूर्व प्रकाशित

गोयल कॉमिक्स

के रोमांचकारी कॉमिक्स

- चाचा चपंकलाल और मौत का रास्ता
- रहस्यमयी बुढ़िया
- पिलपिली सहाब और हालीवुड का हीरो
- नागिन का बेटा
- धूर्त तांत्रिक का अंत
- लाल लगूर की लंगोटी
- पिलपिली साहब और चरस के स्मगलर
- साहसी मछुआरा
- लाख टके की चारपाई
- मुटकल चुटकल और काली डायन
- चाचा चपंकलाल और खूनी दरिन्दे
- स्वर्ग की सैर
- महाकाल और भूत प्रेत
- चाचा चपंकलाल और किस्तों में मौत
- अनोखी साजिस
- जिन्नी जानी और तस्कर किंग

प्रत्येक का मूल्य रु० 5/-





























नागों का द्वीप

लेखक :-
हनीफ अजहर
सम्पादक :-
ओम प्रकाश गोयल
चित्रकार :-
कमल दीप

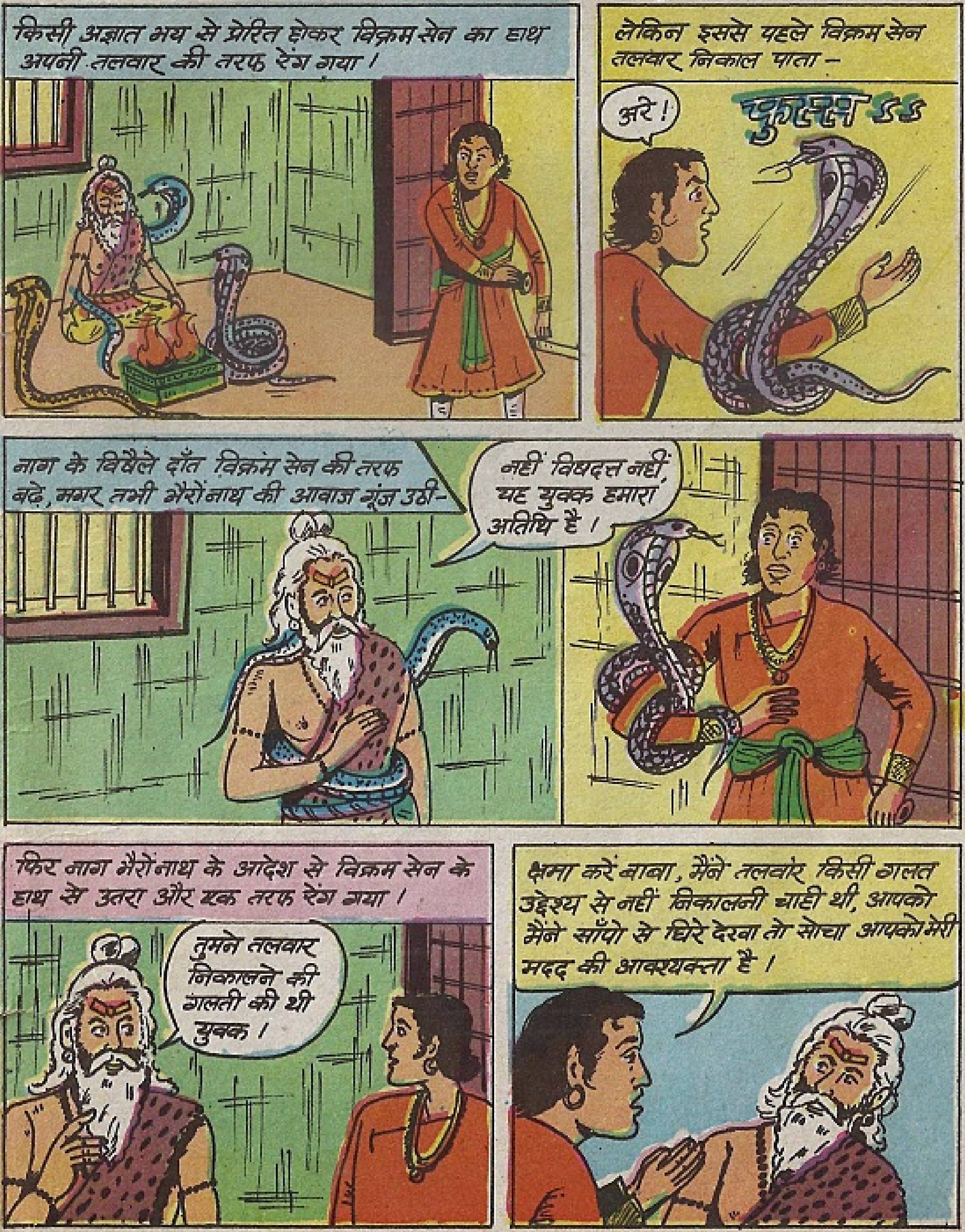
प्रकाशक :- गोयल पॉकेट बुक्स, जुबली सिनेमा के सामने,
91 - बापू मार्किट, फव्वारा, दिल्ली - 6




आनन-फानन में यह खबर जंगल की आग की तरह पूरे राजमहल में फैल चुकी थी—
?
क्या? महाराज को साँप ने डस लिया!
?
?
कोई राजवैद्य को बुलाने भाग उठा —
और जब यह खबर लगान वसूल करने गये राजकुमार विक्रम सेन को लगी तो —
क्या? पिता जी को सर्प ने डस लिया .....
वह तुरन्त अपने घोड़े पर सरपट राजमहल की तरफ भाग लिया।
राजमहल में —
ओह! पिता जी तो सचमुच मृत्यु शैय्या पर पड़े हैं।


वह उतावले स्वर में राजवैद्य से बोला -
जल्दी कीजिये राजवैद्य जी, किसी भी तरह महाराज के शरीर से विष निकालने की कोशिश कीजिये।
मैं महाराज को हर प्रकार की जड़ी बुटियाँ दे चुका हूँ कुमार, परन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि महाराज पर कोई औषधि असर क्यों नहीं कर रही।
ओह!
तो क्या इस विष का कोई काट नहीं राजवैद्य?
ऐसा मैं नहीं कह सकता कुमार, किन्तु मेरी किसी भी औषधि का इन पर असर नहीं हो रहा है, मैं इनका जहर नहीं उतार सकता, हाँ अगर बाबा -
भैरोंनाथ यहाँ आ जायें तो -
यह बाबा भैरोंनाथ कौन है राजवैद्य जी?
बाबा भैरोंनाथ क्या हैं और कौन हैं, यह आज तक कोई नहीं जान सका, वे बाबा कहाँ से आया और कब राज्य के पश्चिम में कुटिया बना कर रहने लगा कोई नहीं जानता, लेकिन ये पक्का है कि वह सर्प विष का बहुत अच्छा विशेषज्ञ है।


राजवैद्य की बात सुनते ही राजकुमार विक्रम सेन बाहर की तरफ चल दिया।
मैं अभी बाबा भैरों नाथ को लेकर आता हूँ।
राजकुमार विक्रम सेन अपने घोड़े पर बैठा और राज्य के पश्चिम की तरफ स्थित जंगलों की तरफ चल पड़ा।
जल्द ही –
तो यह है बाबा भैरों नाथ की कुटिया, अजीब मनुष्य है यह, इतने घने जंगल में रहता है।
राजकुमार विक्रम सेन जैसे ही आगे बढ़ा उसे एक भारी आवाज सुनाई दी –
सीधे कुटिया में चले आओ कुमार हम यहीं उपस्थित हैं।
?
आवाज कुटिया से आ रही थी।
आवाज का पीछा करता जब कुमार कुटिया में घुसा तो वहां का दृश्य देख कर हैरान रह गया।
हे भगवान! बाबा चारों तरफ से नागों से घिरे हैं।


किसी अज्ञात भय से प्रेरित होकर विक्रम सेन का हाथ अपनी तलवार की तरफ रेंग गया।
लेकिन इससे पहले विक्रम सेन तलवार निकाल पाता –
अरे!
फुस्स ऽऽ
नाग के विषैले दाँत विक्रम सेन की तरफ बढ़े, मगर तभी भैरोंनाथ की आवाज गूंज उठी –
नहीं विषदत्त नहीं, यह युवक हमारा अतिथि है।
फिर नाग भैरोंनाथ के आदेश से विक्रम सेन के हाथ से उतरा और एक तरफ रेंग गया।
तुमने तलवार निकालने की गलती की थी युवक।
क्षमा करें बाबा, मैंने तलवार किसी गलत उद्देश्य से नहीं निकालनी चाही थी, आपको मैंने साँपो से घिरे देखा तो सोचा आपको मेरी मदद की आवश्यक्ता है।


हम तुम्हारे साहस से प्रसन्न हैं युवक, लेकिन यह सारे सर्प मेरे दुश्मन नहीं मेरे सेवक हैं।
ओह ! समझा !
अब तुम यहाँ आने का तात्पर्य बताओ युवक !
बाबा भैरो नाथ के पूछने पर विक्रम सेन ने सारी बातें बता दीं –
ओह ! तो तुम रूपनगर के राजकुमार हो और महाराज को किसी ऐसे सर्प ने डस लिया है जिसका विष किसी से नहीं उतर रहा ।
जी बाबा !
सारी स्थिति समझ कर बाबा भैरों नाथ ने अपनी पोटली उठाई और विक्रम सेन के साथ चल पड़ा ।


जल्दी ही दोनों राजमहल में थे। महाराज के कक्ष में पहुँचते ही भैरोंनाथ ने आदेश दिया—
राजकुमार को छोड़ कर शेष सभी व्यक्ति कक्ष से बाहर चले जायें।
जब सब बाहर चले गये तो बाबा ने विक्रम सेन को कक्ष का दरवाजा बन्द करने का आदेश दिया, दरवाजा बन्द होने के बाद बाबा भैरोंनाथ राजा का निरिक्षण करने लगे—
निरीक्षण करते-करते बाबा भैरोंनाथ अचानक गम्भीर हो उठे—
ओह!
?
क्या हुआ बाबा? आप अचानक गम्भीर क्यों हो उठे?
समस्या ही ऐसी है पुत्र!


समस्या.... कैसी समस्या बाबा ?
समस्या यह है कुमार कि तुम्हारे पिताजी का विष कोई भी वैद्य या हाकिम नहीं उतार सकता, यहाँ तक कि मैं भी नहीं।
क्या ?
यह सत्य है कुमार क्योंकि तुम्हारे पिताजी को जिस सर्प ने डसा है वह कोई मामूली सर्प नहीं बल्कि स्वयं नागलोक का नाग राजकुमार विषधर है।
नागलोक का राजकुमार विषधर ?
हां कुमार।
मगर उसने मेरे पिता जी को डसा क्यों ? क्या दुश्मनी थी उसकी मेरे पिता जी से ?
लेकिन बाबा भैरोंनाथ उत्तर दे पाते-
इससे पहले ही अचेत महाराज के मुँह से अट्टहास निकल पड़ा-
हा..हा..हा...
हे भगवान ये क्या... ये तो पिता जी की आवाज नहीं लगती ?


अभी दोनों आश्चर्य के सागर में गोते ही लगा रहे थे कि अचेत राजा फुफकारते स्वर में बोला –
तुमने ठीक पहचाना विक्रम सेन... मैं स्वयं नाग लोक का राजकुमार इच्छाधारी नाग विषधर हूँ......।
म...मगर तुमने महाराज को क्यों डसा ?
इसके अपराध की यही दण्ड था भैरोंनाथ।
कौन सा अपराध किया था महाराज ने ?
परन्तु उत्तर देने के स्थान पर अचेत राजा के मुँह से विषधर का जोरदार अट्टहास गूंज उठा –
हा..हा...हा...
अपनी ऐसी उपेक्षा देख भैरोंनाथ गुस्से में आग बबूला हो उठे उन्होंने आगे बढ़कर महाराज के बाल पकड़े और झंझोड़ते हुए बोले–
मेरी मजाक उड़ाता है मूर्ख अरे तू इच्छाधारी नाग होगा तो होगा, मेरा नाम भी भैरोंनाथ है जाने कितने इच्छाधारी नाग मेरे सेवक हैं, तुझे मेरे प्रश्न का उत्तर देना ही होगा।
?



एक कराह के साथ अचेत राजा के मुँह से निकला –
तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता भैरों नाथ लेकिन मैं अब फिर भी तेरे प्रश्न का उत्तर तुझे दूंगा ।
बात उस समय की है जब मैं मनुष्य योनि में तुम्हारे राज्य के पश्चिम में स्थित जंगलो में एक भील कबीले में रहता था –
मेरी प्रेयसी का नाम रूपा था, यूं तो रूपा भी हमारे कबीले की लड़की थी मगर उसकी सुन्दरता किसी अप्सरा को भी मात करती थी, मैं उससे हमेशा कहता रहता –
तुम अति सुन्दर हो प्रिय !
मेरी बात सुन कर वह शरमा जाती ।
हमारे दिन हँसते-खेलते प्रसन्नता से गुजर रहे थे और शायद गुजरते ही रहते अगर हम उस दिन भील के किनारे ना जाते –
प्रिय कण्टक क्या तुम भील में उगे उस कमल को लाकर मुझे दे सकते हो ?
हां-हां क्यों नहीं प्रिय, तुम किसी वस्तु की इच्छा करो और मैं ना लाऊं यह तो हो ही नहीं सकता ।


'मैं रूपा को वहीं किनारे पर बैठी छोड़ कर झील में घुस गया।
अभी मैं कमल तोड़ भी नहीं पाया था कि मुझे पास ही घोड़े की टाप सुनाई दी–
टप..टप..टप...
घोड़े की टाप... कौन हो सकता है?
मैंने किनारे की तरफ नजर उठा कर देखा तो वहां घोड़े पर एक राजा को खड़े पाया।
महाराज यहां?
मेरे देखते ही देखते महाराज अपने घोड़े से उतरे और रूपा के पास पहुँच गये–
वाह! क्या सुन्दरता है। वाह!
मैं तो यहाँ घोड़े को पानी पिलाने आया था, मुझे क्या पता था यहाँ मेरी किसी स्वर्ग की अप्सरा से मुलाकात हो जायेगी।


ऐसा कहकर महाराज ने रूपा का हाथ पकड़ लिया।
मेरी पटरानी बनना स्वीकार करोगी सुन्दरी?
वह दृश्य देखते ही मेरी आँखों में खून उतर आया मैं तुरन्त झील से बाहर आया और महाराज को ललकारने लगा—
सावधान राजन रूपा का हाथ छोड़ दो वरना...
मैं इससे पहले कुछ कर पाता महाराज ने तलवार निकाली और अप्रत्याशित ढंग से मुझ पर वार कर दिया।
ये ले मूर्ख
आह!
मैं अचेत अवस्था में नीचे गिर गया।
रूपाऽऽ
कण्टक...

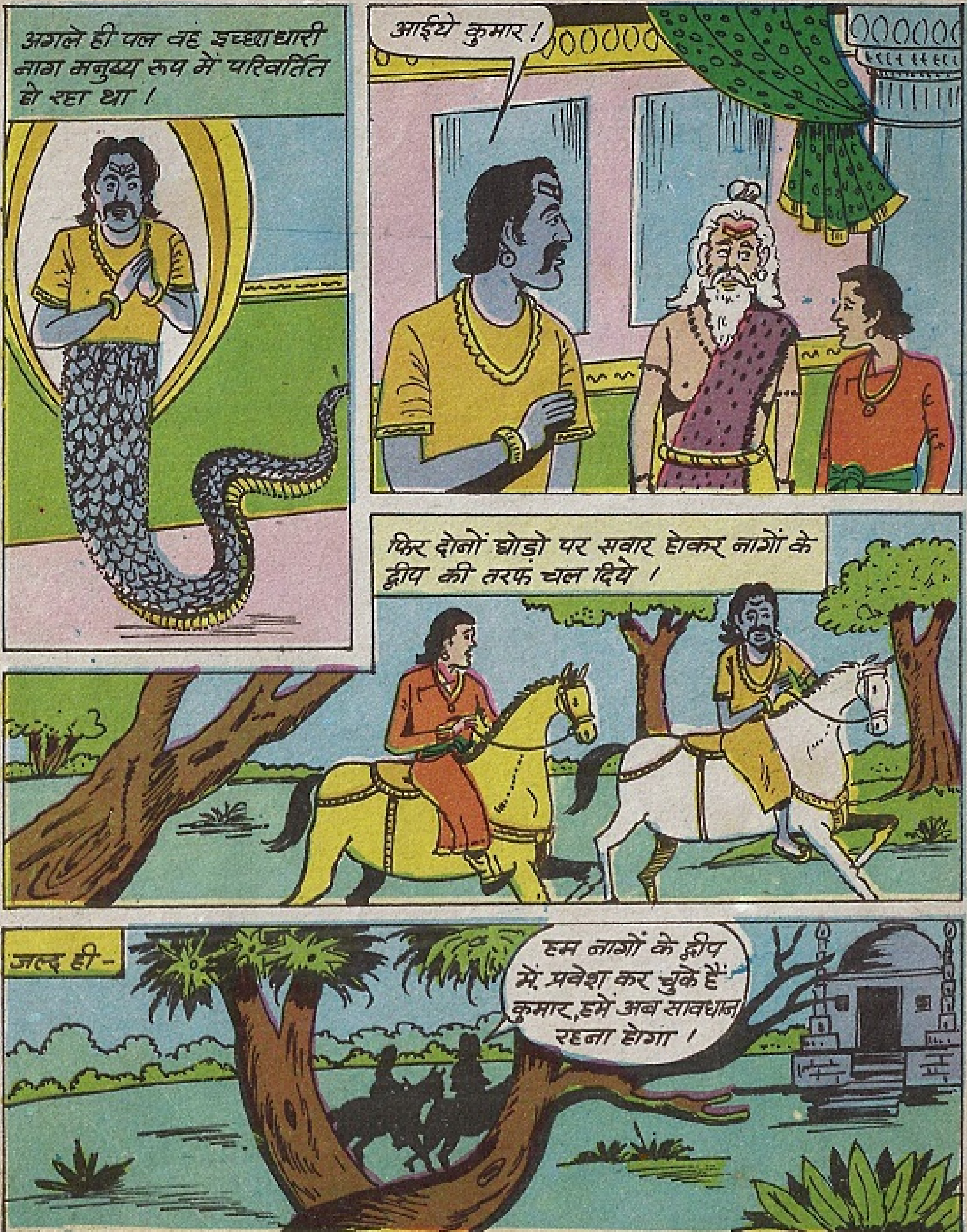

रूपा अचानक झील की तरफ भागी –
ठहरो सुन्दरी... आगे मौत है .....
लेकिन रूपा ने एक नहीं सुनी और गहरी झील में छलांग लगा दी –
छपाक
जब मुझे होश आया तो मैंने देखा महाराज वहां से जा चुके थे मैंने रूपा की खोज में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई ।
और जैसे ही मेरी दृष्टि झील में तैरती रूपा की लाश पर पड़ी तो मेरे कंठ से चीख निकल गई –
नहीं ssss
मैं झील में कूद गया –
और फिर रूपा की लाश को झील में से निकाल कर मैंने लकड़ियाँ इकट्ठी की और रूपा का क्रिया कर्म कर दिया ।


रूपा की चिता की अग्नि से भयंकर मेरे सीने में अग्नि धधक रही थी -
तेरी चिता की कसम रूपा मैं उस निर्दयी राजा से बदला जरूर लूंगा।
जब चिता की अग्नि ठण्डी हो गई तो मैं वहीं बैठ कर तपस्या करने लगा।
ओम नमः शिवाय.....
कई वर्षों मैंने वहीं झील के किनारे घोर तपस्या की -
ओम नमः शिवाय।
ओम नमः शिवाय.....
आखिर मेरा परिश्रम रंग लाया, एक दिन भगवान शिव ने मुझे स्वयं दर्शन दिये।
हम तुम्हारी तपस्या से अति प्रसन्न हैं तुम मांगो क्या वर मांगते हो।
मैंने भगवान शिव के चरणों में नतमस्तक होते हुए कहा -
प्रभू अगर आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसी शक्ति दें जिससे मैं इच्छाधारी नाग में परिवर्तित हो जाऊं।
भगवान शिव मेरी बात सुनकर थोड़ी देर सोच में डूब गये फिर बोले-
तथास्तु।


भगवान के इतना कहते ही मैं नाग में बदलने लगा –
आप धन्य है प्रभु आपने मुझे इच्छित वर देकर कृतज्ञ कर दिया !
मेरा इतना कहते ही भगवान शिव अंतर्ध्यान हो गये.
और मैं राजमहल की तरफ लपका, अपना बदला लेने।
अब तू नहीं बचेगा मार्कण्डेय-सेन .....
और इस तरह यहाँ आकर मैंने अपना कार्य पूरा कर दिया।
ओह! तो यह कहानी है तुम्हारी
हां भैरोनाथ, अगर मैं चाहूं तो महाराज को एक पल में ही समाप्त कर दूं मगर मैं इसे इतनी आसान मौत नहीं मारना चाहता मैं इसे तड़फा-तड़फा कर मारूंगा, इसके प्राण रोज कम होते रहेंगे, ज्यों ज्यों इसकी अचेतावस्था के दिन बढ़ेंगे त्यों त्यों इसकी –
जिन्दगी कम होती जायेगी, हा..हा..हा..
तभी भैरों नाथ होठों ही होठों में बुदबुदाने लगे –
अरे! बाबा को क्या हुआ ?


थोड़ी देर बाद वह विक्रम सेन से बोले—
विक्रम सेन यदि तुम अपने पिताजी की जान बचाना चाहते हो तो तुम्हें नागों के द्वीप में जाना होगा।
अ... आप यह क्या कह रहे हैं बाबा.. आप को मालूम नहीं कि विषधर हमारा हर वाक्य सुन रहा है।
उसकी चिन्ता मत करो कुमार मुझे सारी स्थिति का पता है इसलिये मैंने अपने और तुम्हारे पिता जी के आस पास मन्त्रों से एक रेखा खींच दी है, अब हमारी आवाज विषधर तक कत्तई नहीं पहुँच सकती।
ओह! अब आप कहिये क्या कहना चाहते हैं।
मैं यह कहना चाहता हूँ कुमार कि अगर तुम किसी तरह नागों के द्वीप पर जाकर नागदेवी के आँख में जड़ी नागमणी ले आओ तो फिर हमारी शक्तियाँ भी विषधर के बराबर हो जायेंगी।
लेकिन बाबा मैं नागों के द्वीप तक पहुँचूगा कैसे ?
मैं अपने सेवक इच्छाधारी विषदत्त को तुम्हारे साथ भेज दूंगा। चुंकि विषदत्त कभी नागों के द्वीप का ही निवासी था इसलिए वह तुम्हें वहां तक पहुँचा देगा।
इतना कहकर बाबा भैरोंनाथ थोड़ी देर चुप रहे।
और फिर बोले—
तुमने नागों के द्वीप पर पहुँच कर अपने प्राण बचाने के साथ-साथ यह भी ध्यान रखना है कि ज्यों-ज्यो दिन बढ़ेंगे तुम्हारे पिता की मृत्यु और नजदीक आती जायेगी।


मैं ध्यान रखूंगा बाबा !
फिर बाबा भैरों नाथ ने हाथ उठा कर कहा –
विषदत्त प्रकट हो !
अगले ही पल विषदत्त वहां था।
क्या आज्ञा है स्वामी !
विषदत्त तुम तुरन्त कुमार को लेकर नागों के द्वीप की तरफ रवाना हो जाओ !
जो आज्ञा स्वामी !


अगले ही पल वह इच्छाधारी नाग मनुष्य रूप में परिवर्तित हो रहा था !
आइये कुमार !
फिर दोनों घोड़ो पर सवार होकर नागों के द्वीप की तरफ चल दिये !
जल्द ही -
हम नागों के द्वीप में प्रवेश कर चुके हैं कुमार, हमें अब सावधान रहना होगा !


विषदत्त विक्रम सेन को लेकर सावधानी पूर्वक आगे बढ़ रहा था।
लेकिन उन्हें ये नहीं पता था कि नागों के द्वीप पर खतरा सिर्फ नीचे ही नहीं -
ऊपर भी था।
फुस्स...फुस्स..
फुस्स
हिन्न...हिन्न...हिन्न
और जब तक वह समझ पाते -
ओह!
फुस्स ss
फुस्स ss
फुस्स....
फुस्स..


अपने गले में पड़ा नागपाश विक्रम सेन को पल-प्रति पल कसता जाता लग रहा था।
आह !
फुस्स...फुस्स...
और जैसे ही विषदत्त की निगाह उस पर पड़ी-
ओह ! विक्रम सेन के प्राण खतरे में....
अगले ही पल इच्छाधारी साँप अपने असली रूप में था।
फुस्स ऽऽ
फुस्स..
फुस्स..
अब दो नाग शक्तियाँ आपस में टकरा रही थी-
फुस्स ऽऽ
फुस्स ऽऽ


फुस्स ऽऽ
फुस्स ऽऽ
जल्दी ही–
ची ऽऽऽ
इधर विक्रम सेन भी नागशक्तियों से टकराने का भरसक प्रयास कर रहा था।
खचाक
खचाक
जल्दी–
उफ! मृत्यु के इतने पास से मैं सकुशल लौट आया, विश्वास नहीं होता।
यहाँ खड़े रहकर समय गंवाने का समय नहीं है कुमार, आगे बढ़ो अगर यहाँ हुए तमाशे की नाग सेना को खबर लग गई तो अनर्थ हो जायेगा।
अभी हमें और कितनी दूर जाना होगा विषदत्त?
बस पास ही नाग देवी का मन्दिर है कुछ ही देर में हम वहां होंगे।



जल्द ही दोनो नागदेवी की विशाल मुर्ति के सामने थे
यही है नाग देवी, मैं अभी मणी प्राप्त करता हूँ।
विक्रम सेन मणी प्राप्त करने आगे बढ़ा मगर तभी विषदत्त चेतावनी भरे स्वर में चीख उठा-
ठहरो कुमार
क्या हुआ विषदत्त ?
अगर तुम समझ रहे हो कि यहां तक पहुँचने के बाद तुम मणी को आसानी से प्राप्त कर लोगे तो यह तुम्हारी भूल है।
?
हां कुमार, तुम जैसे ही मणी प्राप्त करने के लिये मणी को हाथ लगाओगे वैसे ही देवी के मुंह से निकल कर एक इच्छाधारी नाग तुम पर झपटेगा, उससे बिना लड़े तुम मणी प्राप्त नहीं कर सकते।
ओह!
विषदत्त की बात सुन विक्रम सेन थोड़ी देर सोच में डूब गया।


फिर दृढ़ स्वर में बोला-
मुझे यह मणी किसी भी कीमत पर प्राप्त करनी है, मैं इसके लिये किसी इच्छाधारी साँप क्या, यम से भी टकराने को तैयार हूँ!
तो ठीक है कुमार, देवता का नाम लेकर आगे बढ़ो!
तुरन्त ही विक्रम सेन मुर्ति के चबूतरे पर चढ़ -
सावधानी से नागदेवी की मुर्ति पर चढता चला गया।
ये रही मणी!

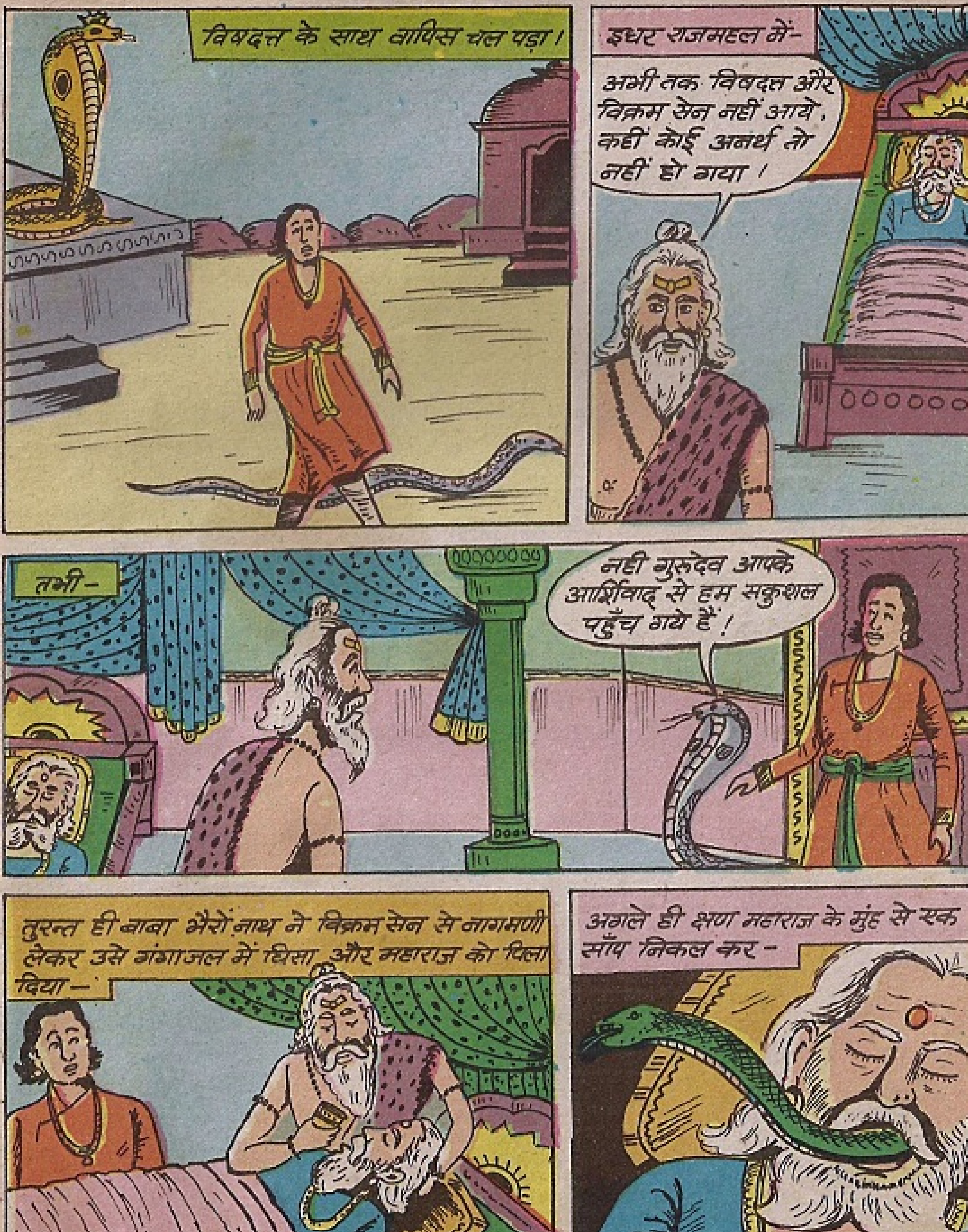

लेकिन जैसे ही विक्रम सेन ने मणी को छुआ –
ओह!
फूं ऽऽऽ
नाग देवी के मुंह से निकले नाग ने जोरदार फुंफकार छोड़ी!
फूं ऽऽऽ
आह!
अगले ही पल –
आह!
धड़ाम
वह इच्छाधारी नाग भी नीचे कूद गया।
फुस्स
और इससे पहले विक्रम सेन सम्भल पाता वह नाग एक बलिष्ठ पहलवान में परिवर्तित हो गया –
अब विक्रम सेन और पहलवान रूपी इच्छाधारी नाग आमने-सामने थे।


विक्रम सेन ने उछल कर अपनी दोनों लातें उसकी छाती पर जड़ दी –
धड़ाक
हा..हा..हा..
मगर परिणाम –
उफ !
और इससे पहले कि विक्रम सेन दुबारा सम्भल पाता –
धड़ाक
आह !
धाड़
आह !
धड़ाक
उफ ! कुमार तो बुरी तरह पिट रहा है, मगर अफसोस मैं कुछ नहीं कर सकता ! नागदेवी के समक्ष मेरी सारी इच्छाधारी शक्तियाँ व्यर्थ है !
धड़ाक


दीवार से टकराते ही विक्रम सेन को लगा कि उसकी चेतना लुप्त होती जा रही है।
आह!
इधर वह इच्छाधारी नाग फिर अपने असली रूप में आ चुका था।
वह अपना फन फैलाये विक्रम सेन की तरफ बढ़ा।
फुस्सsss
तभी विषदत्त चीख उठा—
उठो कुमार..उठो... इसकी पूंछ से इसको काबू में करने का प्रयत्न करो।
फूं..फूं..
विषदत्त की आवाज़ सुन कर विक्रम सेन में जैसे नई शक्ति का संचार हुआ।
वह एक झटके से उठा—
और यही वह पल था जब इच्छाधारी नाग उस पर छलांग लगा चुका था।
फूंsss


फू..फू...
ओह बचा!
एक बार वह इच्छाधारी नाग फिर उछला-
फू sss
और इस बार खुद को बचाते हुए विक्रम सेन ने इच्छाधारी नाग की पुंछ पकड़ ली-
आ गई हाथ में!
पुंछ हाथ में आते ही विक्रम सेन ने उसे तेजी से घुमाना शुरू कर दिया।
अब अगर मैंने इसे सम्भलने का मौका दिया तो मेरा अन्त होकर ही रहेगा।
वह इच्छा धारी नाग कुछ करने का प्रयत्न जरूर कर रहा था मगर घुमते होने के साथ उसका मास्तिष्क भी घुम रहा था।
आह!


अगले ही पल विक्रम सेन ने उस इच्छाधारी नाग को घुमाते हुऐ दीवार से मारना शुरू कर दिया।
सड़ाक
सड़ाक
और कुछ ही क्षणों में—
ओह! खत्म हुआ।
शाबास कुमार, अगर तुमने बुद्दि से काम नहीं लिया होता तो तुम्हारी मौत निश्चित थी।
अब तुम नाग देवी की मणी पाने के हकदार हो।
तुरन्त ही विक्रम सेन नाग देवी की मुर्ति पर चढ़ा और मणी निकाल कर—


विषदत्त के साथ वापिस चल पड़ा।
इधर राजमहल में-
अभी तक विषदत्त और विक्रम सेन नहीं आये, कहीं कोई अनर्थ तो नहीं हो गया!
तभी-
नही गुरुदेव आपके आशीर्वाद से हम सकुशल पहुँच गये हैं!
तुरन्त ही बाबा भैरों नाथ ने विक्रम सेन से नागमणी लेकर उसे गंगाजल में घिसा और महाराज को पिला दिया-
अगले ही क्षण महाराज के मुंह से एक साँप निकल कर-


जमीन पर आ खड़ा हुआ ।
फूं ssss
उसने तुरन्त ही बाबा भैरों नाथ पर छलांग लगा दी –
मैं तुम्हे नहीं छोड़ूंगा भैरों नाथ ।
लेकिन तब तक बाबा भैरोंनाथ हाथ की नागमणी मुंह में रख चुके थे ।
नागमणी मुंह में रखते ही बाबा भैरोंनाथ भी नाग में बदल गये।
आओ विषधर मैं भी देखूं तुम में कितनी शक्ति है ।
अब दो महाशक्तियाँ आपस में टकरा गई –
सूं sss
सूं ssss
सूं ssss
सूं sss
अपनी सारी शक्तियाँ इकट्ठी कर नाग कुमार ने बाबा भैरोनाथ की तरफ छोड़ी –
आह!
सूं sss


'बाबा भैरों नाथ ने अपने मुंह की नागमणी निकाल कर नाग कुमार की तरफ उछाल दी –
और इससे पहले वह बच पाता नागमणी से आग निकल कर उस पर पड़ी, नाग कुमार का शरीर धूं-धूं करके जलने लगा।
आह!
जल्दी ही उसका शरीर जल कर राख हो चुका था।
इधर बाबा भैरों नाथ भी मृत्यु के निकट थे।
स्वामी!
बाबा!
दुखीः मत होओ पुत्रो, मुझे अपनी मृत्यु का कोई दुखः नहीं है अपितु यह सोच कर मुझे खुशी है कि मेरे प्राण एक दुष्ट का अन्त करने के बाद निकल रहे हैं।
इतना कर बाबा भैरोंनाथ ने अपने प्रा ण त्याग दिये।



Printed at: Saria Udyog, 44, Chandni Chowk, Delhi-6. Ph: 3270676, 3271436



akfunworld presents. . .
/akfunworld
/akfunworld
WWW.AKFUNWORLD.WORDPRESS.COM
WWW.AKFUNWORLD1.BLOGSPOT.COM